परमात्म ऊर्जा

जो अधीन होता है वह सदैव मांगता रहता है, अधिकारी जो होता है वह सदैव सर्व प्राप्ति स्वरूप रहता है। बाप के पास सर्व शक्तियों का खज़ाना किसके लिए है? तो जो जिन्हों की चीज़ है वह प्राप्त न करें? यही नशा सदैव रहे कि सर्व शक्तियां तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। तो अधिकारी बनकर के चलो। ऐसा सदैव बुद्धि में श्रेष्ठ संकल्प रहना चाहिए। अगर संकल्प श्रेष्ठ है तो वचन और कर्म में भी नहीं आ सकते। इसलिए संकल्प को श्रेष्ठ बनाओ और सदैव सर्वशक्तिवान बाप के साथ बुद्धि का संग हो। ऐसे सदैव संग के रंग में रंगे हुए हो? अनुभव करते हो व अभी जाने के बाद अनुभव करेंगे? सदैव यही समझो कि सोचना है व बोलना है व करना है तो कमाल का, कॉमन नहीं। अगर कॉमन अर्थात् साधारण संकल्प किये तो प्राप्ति भी साधारण होगी जैसे संकल्प वैसी सृष्टि बनेगी ना! अगर संकल्प ही श्रेष्ठ न होंगे तो अपनी नई सृष्टि जो रचने वाले हैं उसमें पद भी साधारण ही मिलेगा। इसलिए सदैव यह चेक करो- हमारा संकल्प जो उठा वह साधारण है व श्रेष्ठ? साधारण संकल्प व चलन तो सर्व आत्मायें करती रहती हैं। अगर सर्वशक्तिवान की सन्तान होने के बाद भी साधारण संकल्प व कर्म हुए तो श्रेष्ठता व विशेषता क्या हुई? मैं विशेष आत्मा हूँ, इस कारण हमारा सभी कुछ विशेष होना चाहिए। अपने परिवर्तन से आत्माओं को अपनी तरफ व अपने बाप के तरफ आकर्षित कर सको; अपने देह के तरफ नहीं, अपनी अर्थात् आत्मा की रूहानियत तरफ। तुम्हारा परिवर्तन सृष्टि को परिवर्तन में लायेगा। सृष्टि का परिवर्तन भी श्रेष्ठ आत्माओं के परिवर्तन के लिए रूका हुआ है। परिवर्तन तो लाना है ना, कि यह साधारण जीवन ही अच्छी लगती है?

यह स्मृति, वृत्ति और दृष्टि अलौकिक हो जाती है तो इस लोक का कोई भी व्यक्ति व कोई भी वस्तु आकर्षित नहीं कर सकती। अगर आकर्षित करती है तो समझना चाहिए कि स्मृति में व वृत्ति में व दृष्टि में अलौकिकता की कमी है। इस कमी को सेकण्ड में परिवर्तन में लाना है। ऐसी हिम्मत है? सोचने में भी जितना समय लगता है, करने में इतना समय न लगे। ऐसी हिम्मत है? तो जो साहस रखने वाले हैं उन्हों के साथ बाप सदा सहयोगी है, इसलिए कभी भी साहस को छोड़ना नहीं। हिम्मत और उल्लास सदा रहे। हिम्मत से सदा हर्षित रहेंगे। उल्लास से क्या होगा? उल्लास किसको खत्म करता है? आलस्य को। आलस्य भी विशेष विकार है। जो पुरुषार्थी पुरुषार्थ के मार्ग पर चल पड़े हैं उन्हों के सामने वर्तमान समय माया का वार इस आलस्य के रूप में भिन्न-भिन्न तरीके से आता है। तो इस आलस्य को खत्म करने के लिए सदा उल्लास में रहो।

शांतिवन-आनंद सरोवर। ब्रह्माकुमारीज़ सुरक्षा सेवा प्रभाग के त्रिदिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, भारत सरकार के रक्षा राज्यमंत्री अजय भट्ट, भारतीय नौसेना के पूर्व वाइस चीफ वाइस एडमिरल सतीश नामदेव घोरमडे, सुरक्षा सेवा प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्ष राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी, रिटा. कर्नल सती, अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन भाई, मुंबई से आईं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. दीपा दीदी तथा अन्य। सम्मेलन में तीनों सेनाओं जल, थल और वायु सेना के अधिकारी और जवान सहित असम राईफल्स, नौसेना, सीमा सुरक्षा बल, सीआरपीएफ से भी अधिकारी शामिल हुए।

कथा सरिता

खेल कैसा ये तकदीर का...

बात बहुत पुरानी है। गुजरात के सूरत शहर में मनसुख लाल नाम के एक व्यापारी थे। इनका कीमती रत्नों का कारोबर था। इनका कारोबर दुनिया के कई देशों में फैला हुआ था। पूरे सूरत शहर में इनका मान और सम्मान था। मनसुख लाल के दो बेटे थे जिनका नाम रामलाल और श्यामलाल था। रामलाल को दौलत और रूतबे का बहुत घमंड था जबकि श्यामलाल एक शरीफ और सुलझा हुआ इंसान था। घमंड के साथ-साथ रामलाल में ईर्ष्या और बेईमानी जैसे अवगुण भी थे। समय के साथ-साथ मनसुख लाल की उम्र बढ़ती जा रही थी। ऐसे में उनके दोनों बेटों ने कारोबार में पिता का अधिक से अधिक हाथ बंटाना शुरू कर दिया था।

कुछ समय के पश्चात मनसुख लाल चल बसे और कारोबार का पूरा भार रामलाल और श्यामलाल के कंधों पर आ गया। बड़ा भाई होने के नाते रामलाल ने व्यापारिक फैसलों में अपनी मर्जी चलानी शुरू कर दी। रामलाल बेईमानी और मक्कारी भरे फैसले लेने लगा। असली रत्न के नाम पर वह नकली रत्न का व्यापार करने लगा, जिससे उसका मुनाफा बढ़ने लगा। इस मुनाफे से उसका बाकी बचा चरित्र भी काला हो गया। दौलत के घमंड में वह परिवार में उन्मादी(सनकी) जैसा व्यवहार करने लगा। दूसरी तरफ शरीफ और सुलझे हुए श्यामलाल को शुरू-शुरू में रामलाल की बेईमानी का पता नहीं चला, परन्तु जब उसने उसके व्यवहार में परिवर्तन देखा तो पूरे माजरे को समझने में उसे ज़्यादा देर नहीं लगी।

रामलाल की करतूतों से श्यामलाल को बड़ा दुःख हुआ। उसने रामलाल को समझाने और सही रास्ते पर लाने की कोशिश भी की। परन्तु वह नाकाम रहा। उल्टे रामलाल श्यामलाल से खफा हो गया औ[र] व्यापार में बंटवारे का बहाना ढूंढने लगा। बंटवारे में भी उसने बेईमानी की साजिश रची। घर में कलह का माहौल पैदा किया। अंततः रामलाल अपनी साजिश में सफल रहा और श्यामलाल के हिस्से के व्यापार पर भी वह कब्ज़ा कर बैठा। रामलाल के व्यवहार से दुःखी होकर श्यामलाल ने शहर में दूसरी जगह अपना ठिकाना बनाया और रत्न के अपने व्यापार को नए सिरे से शुरू किया। ईमानदारी की नींव पर शुरू हुआ श्यामलाल का व्यापार जल्दी ही चल निकला।

एक तरफ जहाँ श्यामलाल की ख्याति देश और विदेश में बढ़ने लगी वहीं दूसरी तरफ रामलाल की करतूतों की पोल खुलने लगी। नकली रत्न के व्यापार के कारण रत्न बाजार में रामलाल की साख को ज़ोरदार झटका लगा। उसके व्यापार का दायरा सिमटने लगा। नौबत यहाँ तक आ गई कि ... अपने शहर का भी कोई व्यापारी रामलाल का नाम ... करने लगा। अब ... कि रामलाल को ध[न] के अभाव में अपना घर, दुकान, सामान तक बेचना पड़ रहा था। जल्दी ही रामलाल के हाथ से सबकुछ निकल गया और वह परिवार सहित सड़क पर आ गया। अब रामलाल को अपने किए पर पछतावा हो रहा था। परन्तु उसकी तकदीर ने जो खेल-खेल दिया था उससे आसानी से पीछे आना उसके लिए संभव नहीं था। दूसरी तरफ श्याललाल की तकदीर का खेल था जिसकी बदौलत वह रंक से राजा बन गया था।

जब रामलाल की बदहाली(खराब हालत) की खबर श्यामलाल को लगी तो उसे बड़ा दुःख हुआ। पुरानी बातों को भूलकर वह भागा-भागा अपने बड़े भाई रामलाल के पास पहुंचा और रामलाल के लाख मना करने के बाद भी उसे परिवार सहित अपने पास ले आया। यह भी तकदीर का ही खेल था कि जिस भाई के साथ रामलाल ने बदसलूकी कर उसे सड़क पर पहुंचा दिया था, वही भाई आज उसे सड़क से उठाकर अपने घर में ले आया था।

शिक्षा : तकदीर कब किसके साथ ... खेल ... उसका अंदाजा ... नहीं लगा सकता। ... तकदीर लिखते हैं।

झोझूकलां-हरियाणा। हीलिंग हिमालय संस्था के संस्थापक प्रदीप सांगवान,जो हिमालय की स्वच्छता एवं पर्यावरण के लिए चर्चित हैं, जिनकी चर्चा मन की बात कार्यक्रम में माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने की, उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. ज्योति बहन तथा ब्र.कु. नीलम बहन।

मालीगांव-कामरूप(असम)। चेतन कुमार श्रीवास्तव,जनरल मैनेजर,एन.आर.रेलवे को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. मेधावती बहन तथा अन्य।

कादमा-हरियाणा। जननायक जनता पार्टी हलका अध्यक्ष रामफल जी कादमा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. वसुधा बहन।